डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा चकिया।

B.A. Part-II
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper-IV·

Date:- 15-02-2023

बूढ़ी काकी : संवेदना और शिल्प

'बूढ़ी काकी' कहानी की संवेदना का सबसे महत्वपूर्ण विषय वृद्धावस्था में निहित सामाजिक असुरक्षा तथा अशक्तता है। इस दृष्टि से यह भीष्म साहनी की कहानी 'चीफ की दावत' के काफी नजदीक है, जिसमें एक बेटा और बहू अपने बॉस को निमंत्रण देते हैं तथा अपनी माँ को अप्रस्तुतीयोग्य मानकर कोठरी में बंद कर देते हैं- वह भी इस हिदायत के साथ कि वह सोये नहीं क्योंकि उनके खर्राटों की आवाज महफिल का मजा किरकिरा कर सकती है। इसमें वृद्धों को मानवीय सहजता के साथ देखने की वकालत भी की गई है। वृद्ध लोग इच्छाओं से रहित नहीं होते बल्कि उसमें इच्छाएं प्रबल होती हैं। यह बताकर प्रेमचंद संकेत करते हैं कि वृद्धों को 'चुका हुआ' व्यक्ति न मानकर उनकी इच्छाओं का सम्मान किया जाना चाहिए। इसी प्रकार, लाडली के माध्यम से वे ये भी दिखाते हैं कि बच्चों की सहजता सामाजिक संबंधों के निर्वाह के लिए कितनी जरूरी होती है।

कुछ दलित चिंतकों ने 'बूढ़ी काकी' के एक प्रसंग पर सवाल खड़ा किया है। उनके अनुसार, किसी भी वृद्ध को

जूठे पत्तल चाटने पड़े, यह अपने आप में समाज के लिए शर्म की बात है, किन्तु प्रेमचंद ने इस समस्या को वर्ण-भेद से जोड़ दिया है। वे इस कहानी में लिखते हैं - "एक ब्राह्मणी दूसरों की जूठी पत्तल टटोले, इससे अधिक शोकमय दृश्य असम्भव था।" किन्तु, प्रेमचंद पर किया जाने वाला यह आरोप पूरी तरह ठीक नहीं है। वस्तुतः इस वाक्य में रूपा की मानसिक प्रतिक्रिया दिखाई गई है और यह दावा करना सम्भव नहीं कि रूपा के माध्यम से प्रेमचंद अपनी सोच बता रहे हैं। वैसे भी 'सद्गति' जैसी कहानियों और 'गोदान' जैसे उपन्यासों (मतादीन-सिलिया प्रसंग) में प्रेमचंद ने दलित वर्ग के प्रति अपनी पक्षधरता खुलकर व्यक्त की है।

शिल्प के स्तर पर यह कहानी प्रेमचंद की सामान्य कहानियों की ही तरह है। इसकी भाषा हिन्दुस्तानी है और इसमें मुहावरों का पर्याप्त प्रयोग हुआ है। सूत्र वाक्यों के माध्यम से मनोवैज्ञानिक टिप्पणियाँ इस कहानी में भी हुई हैं, जैसे- "बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन होता है" या "बुढ़ापा तृष्णा-रोग का अंतिम समय है जब संपूर्ण इच्छाएँ एक ही बिन्दु पर आ लगती हैं।" इस कहानी

में उपमाओं और प्रतीकों का प्रयोग काफी सुंदर तरीके से हुआ है, जैसे – "बूढ़ी काकी अपनी कोठरी में शोकमय विचार की भाँति बैठी हुई थी।" कथानक अत्यंत सरल और सीधा है। चरित्र आमतौर पर एक आयामी हैं, हालांकि रूपा के भीतर आंतरिक नैतिक द्वंद्व गहराई से उभारा गया है। कुल मिलाकर, यह कहानी प्रेमचंद की उस समय की कहानियों का प्रामाणिक प्रतिनिधित्व करती है जब वे आदर्शवादी दुनिया के भीतर रहते हुए यथार्थवाद की ओर शुरुआती कदम उठा रहे थे।